प्रेस विज्ञप्ति

'प्रयोगशाला से निकली प्रौद्योगिकियों का किसानों से फीडबैक मिलना जरूरी' - मयंक डी.डी.एम, नाबार्ड

दिनांक 11 मार्च 2025: "पूसा संस्थान जैसे प्रतिष्ठित शोध संस्थान से निकली प्रौद्योगिकियों के लिए किसानों का फीडबैक अत्यंत आवश्यक है, तभी माननीय प्रधानमंत्री जी की लैब-टू-लैंड की परिकल्पना साकार हो सकती है। इसके साथ ही शोध संस्थानों द्वारा किसान उत्पादक समूहों को प्रश्रय दिया जाना भी जरूरी है।" यह बात नाबार्ड के डी.डी.एम श्री मयंक ने माहौली, जिला पलवल, हरियाणा के किसानों के समक्ष अपनी चर्चा के दौरान कहा।

आज जिला पलवल के माहौली गाँव में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली (पूसा संस्थान) द्वारा प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। यह गाँव पूसा संस्थान द्वारा अपनी प्रौद्योगिकियों के आकलन एवं प्रचार-प्रसार के लिए अंगीकृत किया गया है। यहाँ पूसा संस्थान द्वारा विकसित उपयुक्त प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन लगाए गए हैं, तथा स्थानीय किसानों को संगठित कर होडल फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के गठन कराया गया है। अब यह कंपनी स्वयं अपने पैरों पर खड़ी है तथा कृषि जिंसों का व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन, प्रापण एवं विपणन कर रही है। प्रक्षेत्र दिवस के अवसर पर पूसा संस्थान के वैज्ञानिकों, जिला पलवल के कृषि एवं बागवानी अधिकारियों, नाबार्ड के अधिकारियों एवं 100 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं किसानों की टीम ने किसानों के खेतों में भ्रमण किया गया, जहाँ पूसा संस्थान की अनेक प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन लगे थे जैसे गेहूँ की उन्नतशील किस्में एच.डी. 3226, एच.डी.3298 (विलंब बुआई के लिए उपयुक्त जैव संवर्धित किस्म), एच.डी. 3271, एच.डी. 3369, एच.डी. 3406 (उन्नत एच.डी. 2967), एच.आई. 1653। इसके साथ ही टीम ने सरसों की किस्मों पी.एम. 28 (110 दिन परिपक्वता), पी.एम. 33 (डबल जीरो किस्म), सब्जी जैसे गाजर (पूसा रुधिरा), प्याज (पूसा ऋद्धि), मेथी (पूसा अर्ली बंचिंग), पालक (पूसा भारती, पूसा ऑलग्रीन) के खेतों में भी भ्रमण किया। तत्पश्चात टीम ने बाग में दौरा किया जहाँ आम (पूसा आम्रपाली, पूसा मल्लिका, पूसा अरुणिमा, पूसा श्रेष्ठ), नींबू (पूसा कागजी कलाँ) एवं अंगूर (पूसा नवरंग, पूसा अदिति, पूसा त्रिशाल) के प्रदर्शन लगाए गए थे। इसके पश्चात टीम ने नाबार्ड द्वारा वित्तपोषित कस्टम हायरिंग सेंटर तथा सीमैप, लखनऊ द्वारा सहायताप्राप्त मेंथा तेल निष्कर्षण संयंत्र का भ्रमण किया। इन सभी संसाधनों की देखरेख स्थानीय होडल किसान उत्पादक कंपनी द्वारा की जाती है।

प्रेक्षत्र दिवस के अवसर पर किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसका संचालन डॉ प्रतिभा जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया। डॉ नफीस अहमद, प्रधान वैज्ञानिक ने गाँव माहौली में पूसा संस्थान की वर्तमान परियोजना तथा प्रेक्षत्र दिवस के महत्व को रेखांकित किया। जिला पलवल, हरियाणा के बी.ए.ओ. श्री देवेंद्र ने भी किसानों को हरियाणा में चल रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी, तथा साथ ही प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान सम्मान निधि, किसान क्रेडिट कार्ड आदि से लाभ लेने के तरीकों की भी जानकारी दी। जिला पलवल के उद्यान अधिकारी श्री कृष्ण कुमार ने कृषक उपयोगी बागवानी योजनाओं और सब्सिडी पर प्रकाश डाला।

पूसा संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एवं इस कृषि प्रौद्योगिकी आकलन एवं स्थानांतरण केंद्र के प्रभारी डॉ ए.के. सिंह ने रबी फसलों, प्रमुखतः गेहूँ की नई किस्मों की विशेषताओं और उनके उत्पादन के वैज्ञानिक तरीकों से किसानों को अवगत कराया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित जैव संवर्धित किस्म एच.डी. 3298 के बारे में भी बताया जिसमें प्रोटीन की मात्रा उच्च (12.2%) तथा लौह तत्व (43.1 पी.पी.एम.) मौजूद है जो आगामी समय में खाद्य सुरक्षा के साथ पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगा। पूसा संस्थान में विशेषज्ञ डॉ गोगराज ने सब्जियों तथा डॉ विपिन कुमार ने खरपतवार प्रबंधन एवं सिंचाई की दक्षता बढ़ाने के तरीकों, डॉ सर्वाशीष चक्रवर्ती ने कीटों एवं रोगों के समेकित नियंत्रण के बारे में किसानों को अवगत कराया। स्थानीय किसान एवं होडस फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के प्रमुख श्री दिनेश ने अपनी कंपनी के अब तक के सफर और बीज-खाद के लाइसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया में पूसा संस्थान के वैज्ञानिकों के योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उपस्थित किसानों के साथ प्रश्नोत्तरी एवं चर्चा भी

हुई जिसमें उनकी विभिन्न शंकाओं का समाधान किया गया। कार्यक्रम के अंत में समस्त आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन डॉ पुनीता पी. वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया।

इस प्रक्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम के आयोजन एवं संपूर्ण व्यवस्था में संस्थान के तकनीकी अधिकारियों श्री पी.पी. मौर्या, डॉ परगट सिंह, डॉ रघुवीर सिंह मीना एवं श्री आनंद विजय दुबे ने अथक योगदान दिया। इस प्रक्षेत्र दिवस की किसानों ने सराहना की तथा वैज्ञानिकों से मांग की, कि आगामी समय में इसी तरह अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ ताकि किसानों को वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों का बार-बार मार्गदर्शन मिलता रहे।